



कॉपियों पर बने चित्र से कॉपियाँ रहें सुरक्षित

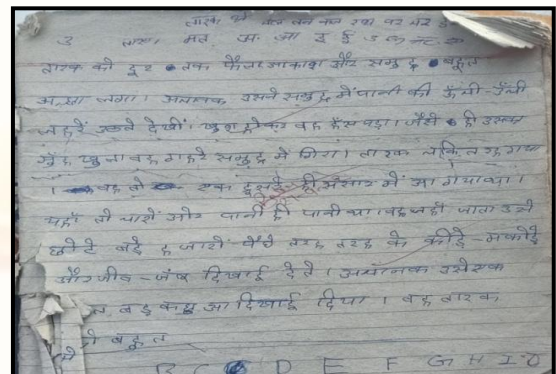
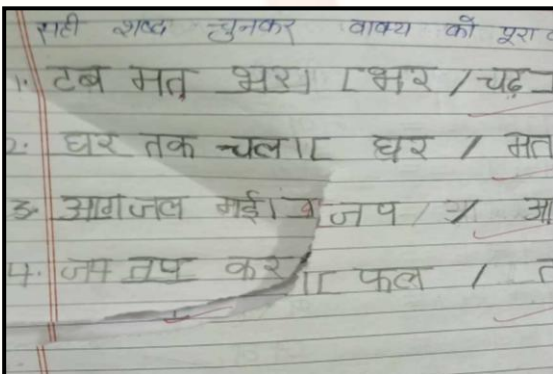
(Keep notebooks safe with the illustrations on their covers)

श्री अभिषेक कुमार मिश्र (सहायक अध्यापक)

प्राथमिक विद्यालय हरीपुर ग्रंट, विकास खण्ड – टड़ियावां,
जनपद – हरदोई, उत्तर प्रदेश

उद्देश्य/ पूर्व की स्थिति-

प्राथमिक विद्यालय हरीपुर ग्रंट, वि. क्षे. टड़ियावां जनपद हरदोई में अध्ययनरत अधिकांश विद्यार्थी आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण अभिभावक विद्यार्थियों के लिए प्रायः 10-20 रुपये की कम पृष्ठों वाली पतली नोटबुक ही खरीद पाते थे। जिससे विद्यार्थियों की प्रत्येक विषय की कॉपी बहुत कम समय में भर जाती थी और पूरे शैक्षिक सत्र के दौरान एक ही विषय की कई कॉपियाँ बन जाती थी। छोटे विद्यार्थियों के लिए इन सभी कॉपियों को सुरक्षित एवं व्यवस्थित रखना अत्यंत कठिन कार्य होता था। नई कॉपी पर कार्य शुरू होने के बाद विद्यार्थी पुरानी कॉपियों को इधर-उधर रख देते थे, खो देते थे एवं अनुपयोगी समझकर फाड़ देते थे। फलस्वरूप शैक्षिक सत्र के प्रारंभ में कराया गया कार्य सत्र के अंत तक सुरक्षित नहीं रह पाता था। इस स्थिति का सबसे अधिक प्रभाव विद्यार्थियों के अधिगम पर पड़ता था। जब अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक परीक्षा का समय आता, तब विद्यार्थियों के पास पूरे वर्ष कॉपियों पर कराया गया कार्य एक स्थान पर उपलब्ध नहीं होता था। वह पहले पढ़ाए गए पाठों, अभ्यासों तथा शिक्षक की टिप्पणियों का पुनरावलोकन नहीं कर पाते थे। इससे नियमित पुनरावृत्ति बाधित होती थी, सीखने की निरंतरता टूट जाती थी और परीक्षा की तैयारी उनके लिए कठिन एवं तनावपूर्ण बन जाती थी। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों को भी विद्यार्थियों की पूर्व प्रगति का आकलन करने तथा प्रारंभिक कार्य का संदर्भ देकर पुनः अभ्यास कराने में कठिनाई होती थी। अभिभावक भी यह नहीं देख पाते थे कि उनके बच्चे ने पूरे वर्ष में क्या-क्या सीखा है। इस प्रकार कम पृष्ठों वाली अनेक बिखरी हुई कॉपियों की व्यवस्था न केवल विद्यार्थियों के लिए चुनौती थी, बल्कि प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में भी एक बड़ी बाधा बन गई थी।

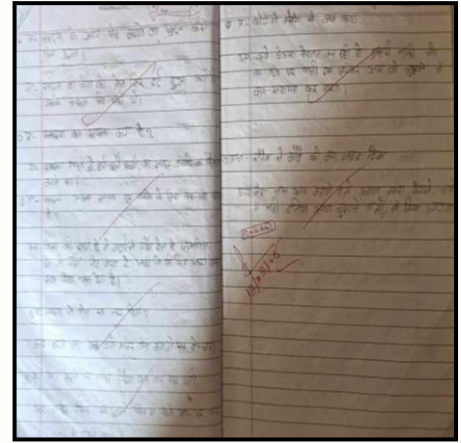
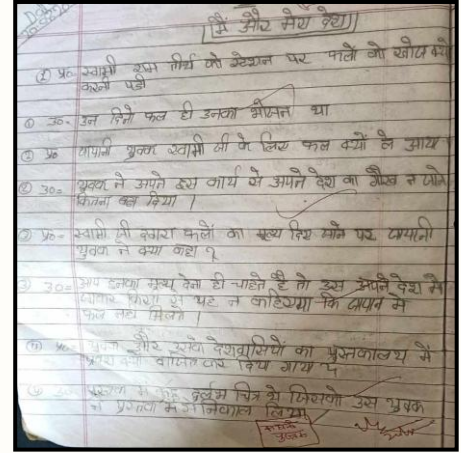


विद्यार्थियों की कॉपियाँ व उन पर कराये गए कार्य की पूर्व स्थिति

इस नवाचार का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की कॉपियों को पूरे शैक्षिक सत्र तक सुरक्षित, व्यवस्थित और उपयोगी बनाए रखना है, ताकि एक ही विषय का पूरा कार्य एक स्थान पर सुरक्षित रह सके। इससे विद्यार्थियों को पुरानी कॉपियाँ खोने या फटने की समस्या से मुक्ति मिलेगी तथा वे पूरे वर्ष पढ़ाए गए पाठों और अभ्यास कार्य की आसानी से पुनरावृत्ति कर सकेंगे। परीक्षा के समय उनके पास सम्पूर्ण अध्ययन सामग्री उपलब्ध रहेगी, जिससे वे अधिक आत्मविश्वास के साथ बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे। जिससे शिक्षकों को विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करने और अभिभावकों को उनके पूरे वर्ष के शैक्षणिक कार्य को देखने में भी सुविधा होगी।

क्रियान्वयन-

इस नवाचार का क्रियान्वयन वर्ष 2024 के जुलाई माह में विद्यालय की कक्षा 5 के 13 विद्यार्थियों के साथ हिंदी विषय की कॉपियों पर किया गया। हिंदी विषय का चयन इसलिए किया गया क्योंकि पूर्व वर्षों के अनुभव में यह पाया गया कि अन्य विषयों की अपेक्षा विद्यार्थी हिंदी विषय की कॉपियाँ अधिक खोते थे। परिणामस्वरूप शैक्षिक सत्र के प्रारंभिक महीनों में कराया गया शैक्षणिक कार्य सत्र के अंत तक सुरक्षित नहीं रह पाता था। इसी को दृष्टिगत रखते हुए कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षक द्वारा नवाचार के अंतर्गत कॉपियों के मूल्यांकन के समय विद्यार्थियों के कार्य, स्वच्छता, नियमितता एवं प्रयास के आधार पर उनकी आवश्यकतानुसार पेंसिल, रबड़, स्केल, बॉक्स, कलर बॉक्स, कहानी पुस्तक, पानी की बोतल आदि उपयोगी वस्तुओं के चित्र शिक्षक द्वारा हस्ताक्षर सहित उनकी कॉपियों में बनाए जाते हैं। मूल्यांकन के दौरान ही विद्यार्थियों को यह स्पष्ट रूप से बताया गया कि कॉपियों में बनाए गए ये चित्र उनके लिए पुरस्कार का आधार होंगे तथा वार्षिक परीक्षा से लगभग एक माह पूर्व (फरवरी माह) इन्हीं चित्रों के आधार पर संबंधित वस्तुएँ उन्हें वास्तविक रूप में प्रदान की जाएंगी। साथ ही उन्हें यह भी निर्देशित किया गया कि इन चित्रों को सुरक्षित रखने के लिए अपनी सभी हिंदी विषय की कॉपियों को पूरे शैक्षिक सत्र में संभालकर रखें। यदि किसी विद्यार्थी की वर्षभर में एक से अधिक हिंदी कॉपियाँ बनती हैं, तो उन्हें हिंदी कॉपी1, हिंदी कॉपी2, हिंदी कॉपी3 आदि क्रम में सुरक्षित रखने के लिए प्रेरित किया जाता है, क्योंकि प्रत्येक कॉपी में बने चित्र पुरस्कार वितरण का आधार होते हैं। फरवरी माह में सभी विद्यार्थियों की हिंदी विषय की कॉपियों का अवलोकन कर उनमें अंकित चित्रों के अनुसार संबंधित वस्तुएँ उन्हें भौतिक रूप से प्रदान की जाती हैं। इस प्रकार निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार पूरे शैक्षिक सत्र में नवाचार का व्यवस्थित रूप से क्रियान्वयन किया गया।



मूल्यांकन के समय चित्रात्मक रूप में इंगित वस्तुएं

सफल क्रियान्वयन एवं सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने के पश्चात इस नवाचार को आगामी शैक्षिक सत्रों में विद्यालय की अन्य कक्षाओं में भी चरणबद्ध रूप से लागू किया जा रहा है, जिससे अधिकाधिक विद्यार्थियों को इसका लाभ प्राप्त हो सके तथा उनके अधिगम परिणामों में निरंतर सुधार सुनिश्चित किया जा सके।

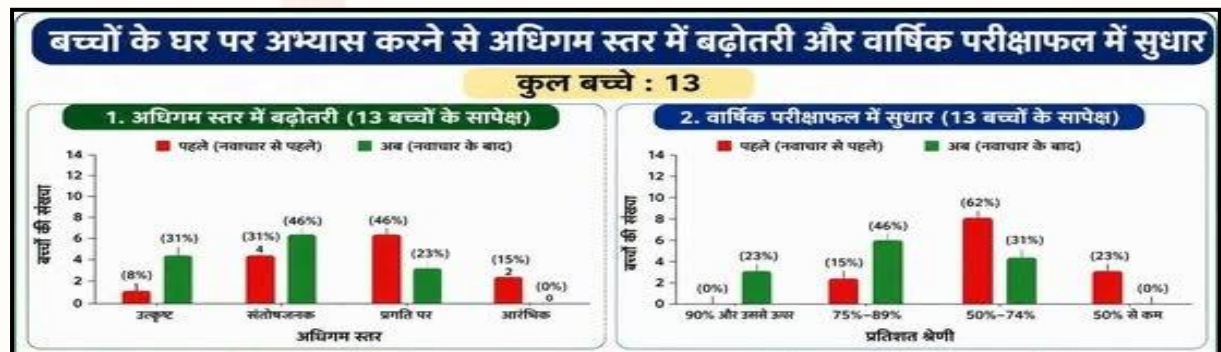
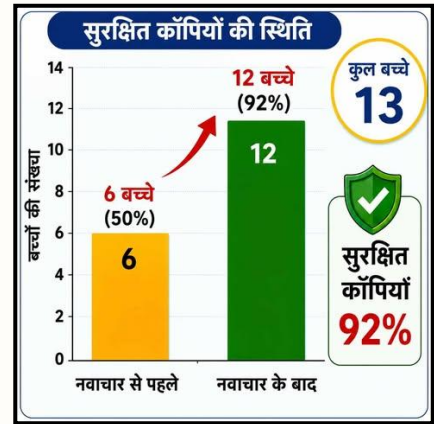


कॉपियों पर बने चित्र के अनुसार वस्तुएं प्रदान करते हुए शिक्षक

प्रभाव -

इस नवाचार का सकारात्मक प्रभाव विद्यालय के विद्यार्थियों पर स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। विद्यार्थियों के अभ्यास कार्य की कॉपियाँ पूरे शैक्षिक सत्र के दौरान सुरक्षित रहने लगीं। विद्यालय की कक्षा 5 में नामांकित कुल 13 विद्यार्थियों में से लगभग 12 विद्यार्थियों की कॉपियाँ शैक्षिक सत्र के अंत तक सुरक्षित रहीं, जबकि नवाचार से पूर्व यह स्थिति लगभग 50 प्रतिशत तक ही सीमित रहती थी। इस प्रकार कॉपियों के सुरक्षित संरक्षण में लगभग 42 प्रतिशत का उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया गया, जिसने विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन और अध्ययन की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

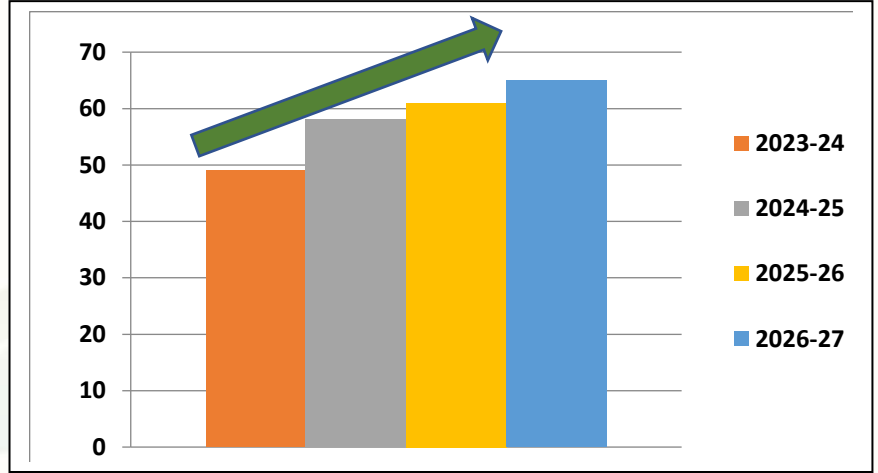
यह देखा गया कि जहाँ एक ओर पुरानी कॉपियों के भर जाने पर बच्चे उनको खो देते थे या कहीं रख कर भूल जाते थे वहीं इस नवाचार के माध्यम से लगभग सभी बच्चे कॉपियों को तो संभाल कर रखते ही हैं इसके साथ ही कॉपी का यदि कोई पेज फट जाता है तो उसको गोंद व टेप की सहायता से चिपका कर सुरक्षित भी करने लग गए। इस नवाचार के क्रियान्वयन से विद्यार्थियों में अपनी कॉपियों के प्रति उत्तरदायित्व, नियमित अध्ययन की आदत तथा सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का उल्लेखनीय विकास हुआ। परिणामस्वरूप बच्चे समय-समय पर घर पर भी अपनी कॉपियों का पुनरावलोकन एवं अभ्यास करते रहे, जिससे होम-बेस्ड लर्निंग को प्रभावी बढ़ावा मिला तथा उनके अधिगम स्तर (Learning Outcomes) में स्पष्ट सुधार देखने को मिला। मासिक टेस्ट के आधार पर विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में बढोत्तरी स्पष्ट दिखने लगी। उत्कृष्ट व संतोषजनक विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी जबकि आरंभिक व प्रगतिशील विद्यार्थियों की संख्या घटने लगी। इसके साथ ही इन 13 बच्चों के वार्षिक परीक्षा परिणाम की तुलना सत्र 2024-25 में उनके पिछले सत्र 2023-24 से करने पर यह पाया गया कि 75% व उससे अधिक अंक दर्ज करने वाले बच्चों की संख्या में भी बढोत्तरी देखने को मिली।



सारांश तालिका (13 बच्चों के सापेक्ष)			
पैरामीटर	नवाचार से पहले	नवाचार के बाद	सुधार
अधिगम स्तर (उत्कृष्ट + संतोषजनक)	5 बच्चे (39%)	10 बच्चे (77%)	+5 बच्चे (38%)
वार्षिक परीक्षाफल (75% और उससे ऊपर)	2 बच्चे (15%)	9 बच्चे (69%)	+7 बच्चे (54%)
अधिगम स्तर (प्रगति पर + आरंभिक)	8 बच्चे (61%)	3 बच्चे (23%)	-5 बच्चे (38%)
वार्षिक परीक्षाफल (50% से कम)	3 बच्चे (23%)	0 बच्चे (0%)	-3 बच्चे (23%)

इस नवाचार का सकारात्मक प्रभाव केवल विद्यार्थियों के अधिगम तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि विद्यालय के नामांकन एवं औसत उपस्थिति पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। सत्रवार विश्लेषण से विद्यालय के नामांकन में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई। साथ ही, बच्चों की औसत मासिक उपस्थिति में भी उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला।

सत्र	नामांकन
2023-24	49
2024-25	58
2025-26	61
2026-27	65

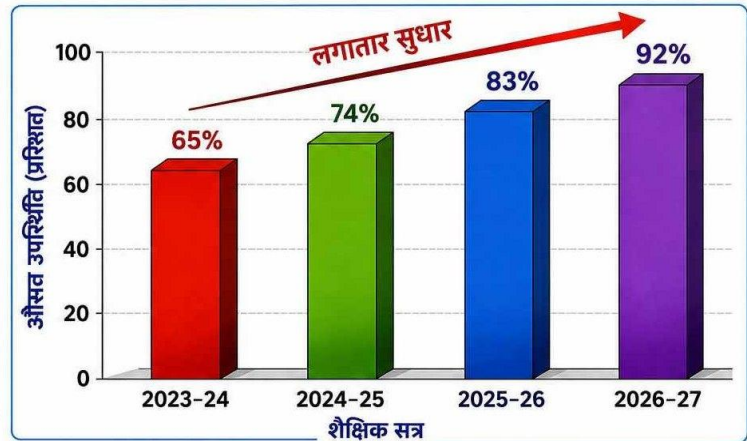


(सत्रवार नामांकन में बढोत्तरी)

नवाचार के उपरांत विद्यार्थियों की औसत उपस्थिति में सुधार

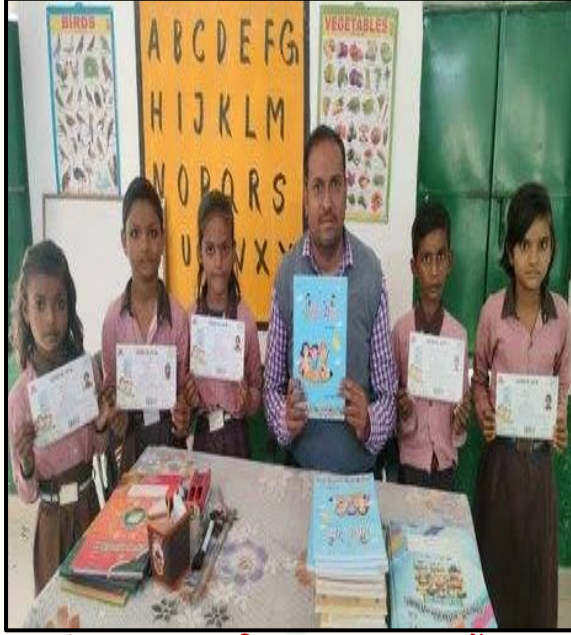
— (नवाचार का प्रभाव) —

शैक्षिक सत्र	औसत उपस्थिति (प्रतिशत)
2023-24	65%
2024-25	74%
2025-26	83%
2026-27	92%



मूल्यांकन के दौरान हस्ताक्षर सहित बनाई गई चित्रात्मक वस्तुओं ने छोटे बच्चों में लोगोग्राफिक पठन (Logographic Reading) की समझ विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बच्चे चित्रों को पहचानते हुए उनसे संबंधित शब्दों और वस्तुओं के बीच संबंध स्थापित करने लगे, जिससे प्रारंभिक साक्षरता कौशल को भी सुदृढ़ता मिली। इस नवाचार ने विद्यार्थियों में अपनी पुस्तकों एवं कॉपियों सहित अन्य शैक्षणिक सामग्री के रख-रखाव, संरक्षण एवं जिम्मेदारी की भावना विकसित की। साथ ही, अधिक चित्रात्मक पुरस्कार प्राप्त करने की प्रेरणा ने बच्चों को सुंदर, स्वच्छ एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य करने के लिए उत्साहित किया। इसके परिणामस्वरूप कक्षा में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का वातावरण विकसित हुआ, जिसने प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी क्षमता के अनुसार बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। नियमित लेखन, अभ्यास एवं कॉपियों के संरक्षण की इस संस्कृति ने विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को भी नया आयाम प्रदान किया। बच्चे केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न रहकर अपनी मौलिक कविताएँ एवं कहानियाँ लिखने के लिए प्रेरित हुए। इसी प्रेरणादायी वातावरण का परिणाम रहा कि विद्यालय के 5 विद्यार्थियों की स्वरचित कविताएँ एवं कहानियाँ राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित पुस्तक 'बाल-मन' में चयनित होकर प्रकाशित हुईं। यह उपलब्धि न केवल विद्यार्थियों की साहित्यिक

प्रतिभा का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान है, बल्कि इस नवाचार द्वारा विकसित अध्ययन संस्कृति, रचनात्मक सोच, आत्मविश्वास एवं सतत अधिगम का भी सशक्त प्रमाण है।



(राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित बाल-मन पुस्तक में

विद्यार्थियों की प्रकाशित रचनाएं)

इस प्रकार यह नवाचार केवल कॉपियों को सुरक्षित रखने का माध्यम नहीं रहा, बल्कि विद्यार्थियों में अध्ययन की निरंतरता, स्व-अध्ययन, रचनात्मक लेखन, उत्तरदायित्व, संसाधनों के संरक्षण तथा गुणवत्तापूर्ण अधिगम को विकसित करने वाला एक प्रभावी एवं परिणामोन्मुख शैक्षिक मॉडल सिद्ध हुआ।

प्राथमिक विद्यालय हरीपुर ग्रंट के बच्चों की रचनाएं बाल मन पुस्तक में प्रकाशित

अदर्रा सखीकृत छात्रों

टडियावा, हरदोई। परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों हेतु प्रकाशित पुस्तक बालमन के द्वितीय संस्करण में प्राथमिक विद्यालय हरीपुर ग्रंट विकास क्षेत्र टडियावा जनपद हरदोई के पाँच छात्र-छात्राओं आदर्श कुमार, निहारिका, दिल्या, उन्नति और दिल्या के लेख चयनित हुए। विद्यालय के मार्गदर्शक शिक्षक अभिषेक मिश्र ने बताया कि शिक्षक श्रेष्ठर वादव द्वारा सम्पादित इस पुस्तक में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के लगभग 150 छात्रों के लेख प्रकाशित हुए। बच्चों ने इसमें स्वच्छ लेख, अपने संस्मरण तथा कहानियों को स्थान दिया व यथासंभव स्थानीय भाषाओं का ही प्रयोग किया। बालमन पुस्तक के माध्यम से छात्रों को अंतर निहित भावनाओं को व्यक्त करने का



अवसर मिलता है जिसके द्वारा लेखन शैली विकसित होती है और साथ ही साथ उनमें तार्किक चिंतन का विकास होता है। डायट प्राचार्य योगेंद्र सिंह ने बाल-मन पुस्तक की सहायता करते हुए बच्चों को शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि बाल मन पुस्तक बच्चों की मौलिक अभिव्यक्ति बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम बनेगी।



(समाचार पत्र में बाल लेखकों की प्रतिभा प्रकाशित)